सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

ubl fnYyh
vad & 112

Jh lkbl ‘kd l 30
Qjojh&ekpl & 2012

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

AA Å; Jh lkbZukFk ue% AA
AA Jh lnx:ukFk nknk; ue%AA

x:cUèk HkkFxfu;ka l

आज जगत में जन्म प्राप्त करने वाले हर एक मानव की मूलभूत जरूरतें अन्न, वस्त्र और निवारा प्राप्त होने के बाद अगली प्राथमिक जरूरत होती है, सुख, शांति और समाधान की। यह सुख, शांति और समाधान दुनिया के प्रत्यके व्यक्ति को श्री गुरू कृपा से प्राप्त हो यह प्रार्थना हम सभी श्री सद्‌गुरू के चरणों में हर रोज करते हैं। सुख की व्याख्या (सुख का मतलब) हर एक व्यक्ति के लिये अलग अलग होता है। सामान्य तौर से हम सुख दूसरों के जीवन के अनुसार निश्चित करते हैं; मतलब किसी दूसरे व्यक्ति को जो सुखों को साधन प्राप्त हुए वही असली सुख है ऐसा हम सोचते हैं और हमें भी वही प्राप्त होने चाहिये ऐसी अभिलाषा रखते है। दूसरों का बड़ा मकान, गाड़ी या अन्य अनेक साधनों में हम सुख ढुंढ़ते हैं और उसी तरह वह दूसरा व्यक्ति किसी तीसरे व्यक्ति को जो सुख प्राप्त है उसमें अपने सुख ढुंढ़ रहा होता है। इसी प्रकार जन्म को आया हर एक मानव दूसरे को प्राप्त हुए सुख को ढूंढ़ रहा होता है। इसी प्रकार जन्म को आया हर एक मानव दूसरे को प्राप्त हुए सुखों की अभिलाषा में अपना पूरा जीवन व्यतीत करता हैं और ज्यादा से ज्यादा सुखों के साधनों का लाभ हो ऐसा प्रयत्न करता है। इन सुखों के या सुखों के साधनों के पीछे दौड़ते दौड़ते हम शांति और समाधान प्राप्त करना भूल जाते हैं और फिर जीवन से दुःखी होकर किसी न किसी देवतार्जन या गुरूमार्ग का लाभ तलाशते हैं। हम सभी भक्त इस गुरूमार्ग में इसीलिये आये और ऐसा सवाल किया कि हमें सुख की प्राप्ति कैसे हो। वंदनिय दादाजी ने हमें हमें अपनी झोली में लिया और यह सिखाया कि गुरूमार्ग या परमार्थ की प्राप्ति करना मतलब कोई सिद्धता करना या दिनभर ज्यादा से ज्यादा उपासना करना ऐसा जरूरी नहीं है तो परमार्थ का लाभ होना मतलब जो दो जरूरतें हम भूल गये थे 'शांति और समाधान' इनका लाभ जीवन में प्राप्त कर लेना यही परमार्थ है। गुरूमार्ग में आगे चलकर खुद का विकास करके गुरू शक्ति अपने माध्यम से प्रवाहित कर संसार के अन्य व्यक्तियों को शांति, समाधान गुरूकृपा से प्राप्त कर देना यही गुरूकार्य है और यह सुख, शांति का रास्ता है।

इस गुरूमार्ग में आने वाला हर एक व्यक्ति यह गुरूकार्य करने के लिए गुरू कृपा के काबिल है लेकिन उसे अपने प्रयत्नों से तैयार होना है। यह प्रयत्न मतलब दैनंदिन ऊँकार साधना, परमार्थ प्रश्नावली में मार्गदर्शन के अनुसार अवधानपूर्वक आचरण और आरती साधना और मुलाकात साधना का हो सके उतना नियमित रूप से लाभ लेना पड़ेगा।

आने वाला हर एक व्यक्ति नियमित रूप से ऊँकार साधना करने पर गुरूकृपा से साधक अवस्था प्राप्त कर लेना है क्योंकि इसकी सिद्धता इस गुरूमार्ग वे वं. दादाजी ने कर रखी है। यह विकास और इसके आगे का विकास गुरूकृपा से कैसे प्राप्त होना है इसका विचार अब करते हैं।

इस धरती पर जन्म प्राप्त होने वाले हर एक मानव को तीन प्रधान माध्यम होते है – काया, वाचा और मन। इन तीन माध्यमों से उसे सुख–शांति–समाधान का अनुभव लेना होता है।

काया	वाचा	मन
सुख	शांति	समाधान

काया : याने शरीर के माध्यम से हम भौतिक सुखों का अनुभव लेते हैं।

वाचा : शांति प्राप्त होने पर वाचा इस माध्यम से शांति व्यक्त होती है।

मन : समाधान इस अवस्था का अनुभव मन के माध्यम द्वारा होता है।

संसार में साधारणतः प्रत्येक मानव अपनी काया के लिए ज्यादा से ज्यादा सुख और सुखों के साधन किस प्रकार प्राप्त हों इन्ही प्रयत्न में अपन सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करता है। उन्हें सुखों में वह शांति और समाधान ढूंढता है, लेकिन शांति और समाधान प्राप्त करना और उनका अनुभव लेना यह मन के विकास पर निर्भर होता है और यही विकास प्राप्त करने के लिए ईश्वरी उपासना की जाती है। वं. दादाजी ने स्थापना किया हुआ अपना यह गुरूमार्ग सिर्फ शांति और समाधान का लाभ लेने तक यह सीमित नहीं है, तो यह शांति और समाधान खुद प्राप्त करके, गुरूकृपा से खुद के माध्यम का विकास करके, अपने माध्यम से दुनिया को प्राप्त करना है।

संसार में अन्य उपासन मार्गों से खुद का विकास प्राप्त कर लेने के लिए 'काया' इस माध्यम से शुरूआत की जाती है।

अन्य उपासना मार्ग विकास – काया – वाचा – मन जिसमें गिरीशिखरों पर तपःश्चर्या करना, तीर्थ क्षेत्र यात्रा, नंगे पांव चलना, इत्यादि से लेकर व्रत करना, उपवास करना, भूखे रहना, प्याज आदि चीजें नहीं खाना, इत्यादि तक अनेक बंधन काया के लिये होते है और फिर वाचा के लिए मौन रखना, इत्यादि बंधन सहकर 'मन' की खोज की जाती है।

पुरातन काल में जब जीवन में अन्य विषय (मन को बुद्धि को विचलित करने के लिये) कम थे, तब यह बंधन में रहकर नित्य उपासना करके लोग अपने मन का/माध्यम का विकास प्राप्त कर लेते थे। लेकिन आज के समय में, जब जीवन में बुद्धि को, मन को विचलित करने के लिये असंख्य विषय है और हर रोज अनगिनत विषय बढ़ रहे है तब काया पर बंधन डालकर 'मन' तक पहुँचना नामुमकिन है। इन्हीं चीजों का अभ्यास करके वं. दादाजी ने यह सिद्ध गुरू कार्य स्थापन किया जिसमें विमोचन साधन, दीक्षाओं की प्राप्ति और सिद्धता विश्वरूप/ब्रह्माण स्वरूप ऊँकार के माध्यम से साकार कर, उसे सौम्य रूप देकर उसके माध्यम से शब्द ब्रह्म और स्पर्शब्रह्म के स्वरूप से की है। इस गुरूमार्ग में आने पर हम पर वं. दादाजी ने कोई भी बंधन (काया के लिये) नहीं बनाये, तो यहाँ पहले 'मन' पर संस्कार करके विकास की शुरूआत कर दी।

गुरू कृपार्शिवाद →

मन	वाचा	काया
↓	↓	↓
समाधान प्राप्ति	शांति	सुख
↓	↓	↓
आकार अवस्था	साकार	निराकार
(मन का विकास)	(वाचा–वाणी)	(काया–मन)
↓	↓	↓
विमोचन + दीक्षा	कारण दीक्षा	महाकारण अवस्था
	↓	
	गुरूशक्ति का मध्यस्त	
	Clair Voyance	
	Clair Audience	
	Trans	
	HEALING	

जब हम पहली बार कार्य केन्द्र पर आये तभी गुरू कृपाशिर्वाद हमारे माध्यम में श्री गुरू ने धारण कर दिया। उसका एहसास ज्ञान या पहचान सही मायने में शायद आज भी हमें नहीं हुआ है। यह गुरू कृपार्शिवाद, गुरू बीज स्वरूप में मन पर संस्कार करता हैं मन का विकास प्राप्त होने के लिये हमारे जीवन की प्रतिकूलता निवारण हो इसलिए विमोचन साधन है और साथ में दीक्षाएँ कार्यान्वित होने लगती है। इसीलिये पहले पांच या ग्यारह हफ्तों में समाधान की प्राप्ति होने लगती है और हम इस कार्यकेन्द्र का लाभ लेने लगते है। तब श्री गुरू हमारे माध्यम में आकर अवस्था की सिद्धता कर देते हैं उस "आकार" अवस्था को प्राप्त करना। उसके लिए प्रयत्न करना हमारा कर्त्तव्य हैं इसीलिए निश्चित उपासना/सेवा के साथ निश्चित आहार, निश्चत आचार, निश्चित उच्चार और निश्चित विचारों के लिये प्रयत्न करना हमारा कर्त्तव्य है।

वं. दादा जी ने यह अवस्था प्रदान करते समय उसकी सिद्धता करके कार्यान्वित की, ऊँकार माध्यम से जो की ब्रह्माण्ड स्वरूप है। यह विश्व स्वरूप ऊँकार हमारे "मन" में वं. दादाजी ने धारण कर दिया है। ऊँकार यह विश्वस्वरूप होने के कारण विश्व के सभी विषय उसमें समाये हुए है। इसीलिये जैसे जैसे मन का विकास गुरू शक्ति के होने लगता है वैसे बुद्धि और काया में धारण हुए अन्य विषय "मन" के माध्यम में (धारण किये हुए ऊँकार में) विलिन होने लगते है और उसी वजह से आहार, आचार, उच्चार और विचारों पर संयम आना या निश्चितता प्राप्त होना यह गुरूकृपा से मुमकिन होता है। लेकिन यह अपने आप नहीं होगा तो इसके लिये अपने खुद के प्रयत्न आवश्यक है। इसका गहन विचार करना आवश्यक है।

आकार–साकार–निराकार अवस्थाएँ कैसी है तो जैसे हम चावल और सब्जी बाजार से लेकर आते हैं तो वह हम वैसे ही (कच्चा) नहीं खाते तो पहले वह अनाज साफ करते हैं, धोते है, काटते है, उसमें से कंकर, मिट्टी अलग करते हैं यह विमोचन है जैसे हमारे जीवन में श्री गुरू ने गुरू कृपाशिर्वाद धारण करके दिया और जीवन की प्रतिकूलता का विमोचन किया। अब जीवन को आकार देना है, मतलब उस चावल और सब्जी को स्वादिष्ट सामग्री डालकर पकाना है। जब वह पूरी तरह पक गयी तो बिरयानी की खुशबू आने लगेगी, यह "आकार" अवस्था है। अब साकार अवस्था मतलब वह अनाज खुद खाना नहीं तो दुनिया को खिलाना है और दुनिया को खिलाते हुए जो बचेगा वह अपने लिये है। निराकार अवस्था मतलब जब दुनिया को अनाज मिला तो वह संतुष्ट हो गयी तब यह सोचना की अनाज तो गुरू ने दिया और उन्हीं की दूआ से पका, तो जो कुछ अच्छा हुआ वह गुरू कृपा से हुआ, खुद के वजह से नहीं। यानी अंहकार नहीं तो अहम्–आकार प्राप्त करना मतलब निराकार होना।

आकार अवस्था में जब गुरू शक्ति का लाभ बढ़ने लगता है तब निश्चित उपासना (ऊँकार साधना हर रोज और आरती एवं मुलाकात साधना का लाभ हफ्ते में एक बार) इसके साथ परमार्थ प्रश्नावली में बताये अनुसार आचरण करते समय शांति और समाधान से भर जाये तब उसके बाद प्राप्त होने वाली गुरूकृपा हमारे माध्यम से प्रवाहित होकर दुनिया के अन्य व्यक्तियों को शांति और समाधान देने लगती है। यह साकार अवस्था का आरम्भ है। तब कारण दीक्षा गुरूकृपा से कार्यान्वित होने लगती है और गुरूमार्ग में आने वाला भक्त मध्यस्त/साधक अवस्था प्राप्त करता है। मध्यस्त की चार प्रमुख अवस्था है :

1. Clair Voyance : दिव्य दृष्टि प्राप्त होना।
2. Clair Audience : दिव्य ज्ञान प्राप्त होना।
3. Healing : संवेदना प्रवाहित करना/कृपापात्र होना।
4. Trance : गुरू शक्ति का मध्यस्त होना, कृपाशिर्वाद धारण करके प्रवाहित करना।

इस गुरूमार्ग में आने वाली प्रत्येक व्यक्ति मध्यस्त होने के लायक है। इसीलिये श्री गुरू ने हमें इस कार्य में शामिल होने के लिये चुना हैं लेकिन हम अपने अनेक जन्मों से कई बुरी आदतों की वजह से अपन विकास प्राप्त कर लेने में देर कर रहे हैं। हम में से किसका विकास कब हो यह कहना मुश्किल है लेकिन आज हमें गुरूकृपा से क्या प्राप्त हो सकता है यह समझना जरूरी है क्योंकि उसका महत्व समझ गया तो उसके लिये अपने प्रयत्न बढ़ जायेंगे।

आज अगर हम नियमित रूप से ऊँकार साधना कर रहे है और आरती, मुलाकात साधना का भी लाभ ले रहे है, वैसे ही अपने हिसाब से आचरण करने का प्रयास भी कर रहे है तो आगे की आकार और साकार अवस्था के लिये अवधान रखना जरूरी है। साकार अवस्था में मध्यस्त की अवस्था तन्मात्र पहले Receptors (धारण करने के लिये) कार्यान्वित होने लगते हैं इसका अनुभव लेने की कोशिश आज हमें करनी चाहिये। मतलब क्या हम कोई धोया हुआ कपड़ा और न धोया हुआ कपड़ा छुकर पहचान सकते है? क्या हमें अपना शर्ट, ड्रेस बिना धोये दूसरी बार पहनते समय अजीब लगता है। और तभी दूसरा धोया हुआ ड्रेस पहनकर FRESH लगता है? इस प्रकार के कई अन्य सूक्ष्म अनुभवों का अभ्यास अब हमें करना है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह कार्य नाथ पंथियों का है। इस पंथ में ऐसा वचन है कि कोई भी अनुभव (आध्यात्मिक विकास का अनुभव) 'षट्कर्णी' मतलब छः काने में नहीं समझना चाहिये। हमें अनुभव आया तो अपने दो कान श्री गुरू ने अनुभव दिया तो उनके दो कान मिलकर चार हो गये। अब अगर वो अनुभव किसी तीसरे व्यक्ति को बताया मतलब षटकर्णी किया तो उसका लाभ नहीं होता और आगे का विकास रूक सकता है।

हर एक गुरू सेवक का कोई एक तन्मात्र अधिक विकसित होता है। गुरू उसे पहचानकर उस सेवक से यथोचित उपासना करवा के उस तन्मात्र का विकास प्राप्त कर देते हैं, जिससे उस सेवक के अन्य तन्मात्र भी विकसित होने लगते है और वह साधक का काम करने के लिए गुरू कृपा से सिद्ध होता है यह कार्य आने वाले समय में गुरू करते रहेंगे।

यह विकास 'मन' से प्राप्त कर लिया तो 'वाचा' का स्थित्यंतर 'वाणी' (गुरूवाणी) में होता है और फिर ईश्वर का या गुरू का और गुरूशक्ति का अनुभव लेने के लिये 'काया' का लाभ होता है यह असली सुख काया से प्राप्त करना है। यह प्राप्त किया तो जीवन में सुख–शांति समाधान का लाभ हुआ। इसी प्रकार का सुख–शांति–समाधान दुनिया में हर एक व्यक्ति को गुरूकृपा से प्राप्त हो जिससे मानवी जीवन ईश्वरमय हो, यही संकल्प वं. दादाजी ने स्थापन किये हुए इस कार्य का है।

हर एक व्यक्ति के 'मन' की/विकसित मन की यही इच्छा होती है कि उसके जीवन का सार्थक हो दुनिया के काम के लिये जीवन का कुछ भाग तो व्यतीत हो। यह इच्छा निसर्ग के आधीन है और यह जीवन का कारण श्री गुरू कारण दीक्षा से उदीत कर रहे हैं। जिस प्रकार हर एक नदी को सागर में जाकर मिलना होता है। आज हमारी जो अवस्था है, वैसे ही नदी का उद्‌गम भी छोटा होता है लेकिन बरसात के पानी से गिरी शिखरों से बढ़ते हुए वे आकार अवस्था प्राप्त करती है। वह विशाल नदी सागर को मिलने के लिये बहती है। उसकी 'साकार' अवस्था प्राप्त करती है। उसकी साकार अवस्था मतलब सागर में मिलने का स्थान जब उसके दोनों किनारे विस्तृत होकर सागर में विलिन हो जाते है। दो किनारे विलिन हो गये मतलब साधक को न जनम रहा, न मरण रहा। रह गया तो सिर्फ कारण (कारण दीक्षा) और उसे प्राप्त कर वह नदी सागर में विलिन हो जाती है समा जाती है, वही निराकार अवस्था है, जो हमें कभी न कभी गुरूकृपा से प्राप्त करनी है। तब महाकारण अवस्था में गुरूचरणों में रहकर अखंड गुरू कार्य करना है। ऐसी सिद्धता, ऐसा गुरूकृपाशिर्वाद इस कार्य में है। इसीलिये श्री पंत महाराजजी ने कहा है कि :

काय मागु तूज सदा दिंबरए, दत्त स्मशान वासी।
भुक्ती न मागे, मुक्ती न लगे, बुडवी समर सी।।
तु जीवणे अन्य त्रिभुवनी नाही, कवणा काय देशी।
मागत्याचा पत्ता नाही, तुंचि सर्व देशी।।
दत्त चरणांची साझ भी दे तो, काही तू मांगे।
कृपा दृष्टि ने दीन दासा, पान्ही अनुरागे।।
कर्त्तत्वाचे असहन ओले, घेई तू मांगे।
निश्चंतीने सहज दत्ता, भजन रंगे।।

AA 'kHk Hkor AA

tue tue dk lod

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible